Knowledgeable Research –Vol.1, No.8, *March 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

आधुनिक संस्कृत कविता और संस्कृतेतर शब्द

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर|
Email: arun.ugc@gmail.com

****

शोधसार

*ऋग्वैदिककाल से ही भारत में व्यापार होता रहा है | ऋग्वेद में इस बात का उल्लेख मिलता है कि सिन्धु प्रदेश के पानीदार घोड़े, शक्तिशाली रथ तथा ऊनी वस्त्र पूरे विश्व में प्रसिद्ध थे | **अथर्ववेद** में वाणिज्य सूक्त के नाम से एक सूक्त ही है -*

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु ।

नुदन्न् अरातिं परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ||1 ||

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।

ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ||2||

*जातक कहानियों तथा बौद्ध कथाओं में भी समुद्री यात्राओं के वर्णन मिलते हैं | व्यापार कारण एक देश के व्यापारी दूसरे देश को आया-जाया करते थे | अपने विचार विनिमय तथा वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिए उन्हें (व्यापारियों को) उस देश की बोली-भाषा को भी सिखाना पड़ा | हड़प्पावासी बहुत अच्छे समुद्री नाविक के रूप में पहचाने जाते थे | गुजरात के लोथल में मिला पोतगाह(डाकयार्ड) उस समय के दौरान किए जा रहे समुद्री व्यापार का बहुत ही ठोस सबूत है | हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ओमान, बहरीन और पश्चिम एशिया के देशों के साथ सम्पर्क स्थापित किये थे | हड़प्पा काल से ही कपड़ा लगातार ही भारतीय व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में से एक रहा है | **हेगल** के अनुसार-"भारत इतिहास में महत्वाकांक्षाओं की धरती के रूप में जाना जाता है | उनके(व्यापारियों के) इस मेल-मिलाप परिणाम यह हुआ कि एक-दूसरे की भाषाएँ इस कदर आपस में मिल गयीं कि कालान्तर में हिन्दी-संस्कृत के जैसे ही बोलचाल में उनका प्रयोग होने लगा और धीरे-धीरे साहित्यिक विधाओं तक अपनी पकड़ बना लीं |*

बीज शब्द : संस्कृत की नई कविता, साहित्य और साझा संस्कृति |

****

भाषा शब्द की उत्पत्ति 'भाष्' धातु से हुई है- जिसका अर्थ है बोलना या कहना | किसी भी विधा के लेखक की पहचान उसके द्वारा प्रयोग की गयी भाषा से होती है, क्योंकि वही समाज और पाठक तक पहुँचती है | जिस लेखक की भाषा-शैली पाठक के अधिक निकट होगी, उस साहित्यकार को अधिक ख्याति मिलेगी | भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है | हम अपनी बात को अधिकतम लोगों तक कैसे पहुँचायें यही भाषा का उद्देश्य होता है | आधुनिक संस्कृत भाषा के कवियों ने कविता को अलंकृत बनाने तथा लम्बे-लम्बे समासयुक्त शब्दों के स्थान पर सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है | भले ही इसके लिए इसमें उर्दू, फारसी,

अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग क्यों न करना पड़ा हो | इन कवियों ने अपनी कविताओं में रेल, ट्रेन, टिकट, बस, बैट, क्रिकेट, बाल, विकेट, पेप्सी कोकाकोला, बर्गर, पिज्जा, स्टोव, टावर, कुकर, स्कर्ट, टावल, मैक्सी, मिनी स्कर्ट, रेड लाइट एरिया, बाथरूम इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया है | प्रस्तुत शोधपत्र में कुछ प्रतिनिधि कवियों की कविताओं में प्रयुक्त इन्हीं अन्य भाषाओं के शब्दों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है |

संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध हायकू कवि **डॉ. हर्षदेव माधव** ने अपनी कविता में ऐसे ही शब्दों का प्रयोग किया है | कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

(क)"स्टाक एक्सचेञ्ज इत्याख्ये व्यापारे लोकवञ्चक: |

'सेन्सेक्स' इति मे गोत्रं देश भूकम्प कारकम् ||[1]

(ख)नग्नता यत्र चित्रावली संस्तुता सेक्स गीतस्वरैर्गीयतेवासना |

वृत्तपत्राण्यापि व्यक्त लज्जानि च, टी.वी. वि. चेनेल्मयं कामुकं भारतम् ||[2]

इन्होंने अपनी कविता में उर्दू शब्द 'मजलिस' का भी प्रयोग किया है |

कस्मिश्चदग्रामे 'मजलिस' (रात्रिगोष्ठ्यां)

द्राक्षासवबिन्दुषु निमज्जेद् रात्रि: ||[3]

डॉ.हर्षदेव माधव अपनी कविता में 'लल्लू' और 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' जैसे व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग करते हैं-

यस्य यष्टिर्महिषीपि तस्यमिति भो

उल्लूभिर्लल्लुमि: शोभते भारतम् ||[4]

डॉ. रामकिशोर मिश्र ने अपनी कविता में स्टोव, गैस, कुकर आदि शब्दों का प्रयोग किया है |

कापि स्टोव –कूकर-गैसादे: प्रभावेण विहता निजगेहे |

वधू: प्रज्वलित गेहे गेहे ||[5]

डॉ. रामप्रताप ने लिखा है-

राकेट-इन्सेट-कम्प्यूटर/ रेडियो टैलिविजयादीनि/ सञ्चार माध्यमानि/ प्रतिदिनमेव प्रयुनज्मि ||[6]

डॉ.वनमाली विश्वाल ने 'चिप्स', 'हैपी बर्थडे' आदि पर काव्य रचना की है –

(क)नग्नपादा: कण्टकैराहता:

---

[1]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. | पृष्ठ संख्या 222

[2]वही, पृष्ठ संख्या 222

[3]वही, पृष्ठ संख्या 223

[4]भाति ते भारतम् (काव्य), डॉ. हर्षदेवमाधव, चांदिया पल्ली प्रकाशन, उड़ीसा, प्रथम संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 11

[5]विंशशताब्दीसंस्कृतकाव्यामृतम्, (प्रथम भाग) प्रधानसम्पादक श्रीकृष्ण सेमवाल, संकलनकर्ता प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, दिल्ली संस्कृत अकादमी प्रकाशन, संस्करण 2000 ई., पृष्ठ संख्या 545

[6]वही, पृष्ठ संख्या 473

मार्गस्थैर्वा 'चीप्स्'-खण्डै: ||[7]

(ख)सोत्साहं पाल्यतेऽद्यत्वे/ नववर्षपूर्व रात्रि

एक्समास् 'वेलेण्टाइन' डे /पितृश्राद्ध: सुविस्मृत:

सम्पालयते विवाहवार्षिकोत्सव:/प्रतिवर्ष हापी बर्थ डे ||[8]

वक्षस्ताडितकेन शोककविकलैराक्रन्द्यते बाहुभि: |

धिक्कार: स्फुटितोऽद्य कोऽपिनगरे स्टोव पुनः कौतुकी ||[9]

प्रो.बनमाली विश्वाल ने ढाबा जैसे नवीन शब्द का प्रयोग अपनी कविता में किया है |

प्रत्यावर्तनकाले तु

मार्गपार्श्वे ढाबायां भोजनं

मांसहारात् शाकहारात् परं

सामूहिकं किञ्च मद्यपानं

सिद्धत्यत्र चन्दावरदानम् ।। ऋतुवर्णा, पृष्ठ 77

इसके अतिरिक्त इसके अतिरिक्त डॉ.बनमाली विश्वास अपनी रचनाओं में औषध- गोलिका, मम्मि(mother), वाक्कील (lowyer), चायम् (tea), स्मैक् (drug), बसयानम् (bus), अन्तर्जाल: (internet), ई-मेल संकेतम्, क्रिकेट-क्रीडा, फेनकम् (soap), द्रव्य फेनकम् (samphoo) आदि नवीन शब्दों का प्रयोग किया है |

पद्मश्री प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने अपनी कविताओं में अनेक अवधी, भोजपुरी, ब्रज तथा अन्य क्षेत्रीय भाषा शब्दों को लिखा है |

मेनका वा भवेन्मोनिका वा भवेत्

कस्यचित्कौशिकस्य व्रतं खण्डितम्

लालनं वा भवेन्मारणं वा भवेत्

सूकरस्य श्रुतं केवलं क्रन्दितम् ||[10]

और भी –

मातृकर्णं चकर्तैष चौरो भणन्

बाल्यकालेऽनया नो कथं दण्डितम् ||[11]

---

[7]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई. | पृष्ठ संख्या 224

[8]वही, पृष्ठ संख्या 224

[9]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मंजुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 204

[10]वही, पृष्ठ संख्या 204

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी अपने एक लेख में लिखते हैं कि- "राजेन्द्र जी ने आधुनिक संस्कृत-साहित्य को असंख्य नये शब्द दिये हैं। छोले-भटूरे के लिये छविल्लभर्ता (चतुष्पथीयम्, पृ. 10), कालगर्ल के लिये कालगरला (वही, पृ.1), बेलवाटम के लिये वेलिवितानम्, मेंहदी के लिये महेन्द्री, सिविल लाईन्स के लिये श्रेष्ठिचत्वर (वही)। यह सत्य है कि नयापन की चमक के साथ राजेन्द्र जी के कुछ प्रयोग भाषा के व्यावहारिक रूप या वैयाकरणिक सत्य को चुनौती देते हैं। इस दृष्टि से कहीं-कहीं प्रयोग विचारणीय हैं- यथा शतधा द्रवति कुसंस्कृतितटिनी नितरां तटङ्कषा (मृद्वीका, 65) में कुसंस्कृति शब्द का प्रयोग । महामायावन्दना में अधरयुगलम् में अधर शब्द को सामान्य ओष्ठवाचक मानकर अर्थ-ग्रहण करना होगा। "

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने न केवल लोकप्रचलित शब्दों को अपनी सर्जना में स्थान दिया अपितु समकालीन लोकभाषाओं में प्रचलित लोक धुनों, छन्दों, लयों तथा प्रतिष्ठित गीतविधाओं को तद्भावानुरूप ही नूतन संस्कृत नाम देकर संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया है। आपने लोकभाषायी गीत चैता को 'चैत्रकम्", कहरवा को 'स्कन्धहारीयम्', ' सोहर को 'सूतगृहम्" तथा कजरी को 'कं प्रियाऽऽगमनसुखंजरयति या सा कजरी इस रूप से शुद्ध संस्कृत नाम दिये। इसी प्रकार फारसी ग़ज़ल विधा को भी 'गलज्जलिका" ऐसा नाम देकर 'गलन्ति जलानि अश्रूणि यस्यां सा गलज्जलिका' इस रूप में गलज्जलिका शब्द को निष्पन्न किया।

अन्य भारतीय भाषाओं की विधाओं को अपनाने के सम्बन्ध में अभिराज जी दृक् में प्रकाशित अपने एक लेख में लिखते हैं कि- "अर्वाचीन संस्कृत नव- लेख अन्यान्य भारतीय भाषाओं की वाङ्मय विधाओं को दृष्टि में रखकर गतिमान हो रहा है। अतः स्वाभाविक है कि उसे अतीत मात्र से बाँधकर नहीं रखा जा सकता है। उसे स्वच्छन्दता चाहिये सिद्धान्त में भी और व्यवहार में भी। पैरों में बेड़ी पहनकर दौड़ना दुष्कर तो होता ही है।"

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र की नवगीत रचनाओं में आंचलिक प्रयोग प्रचुरता के साथ देखने को मिलते हैं। आंचलिक गीत, लय, छन्द, शब्द यहाँ तक कि उनकी रचनाओं में आंचलिक अभिव्यक्ति भी दृष्टिगोचर होती है। इसलिए राष्ट्रकवि होकर भी **प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र** आंचलिक व लोकधर्मी कवि के रूप में विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनके गीतों में आंचलिक मुहावरों, लोकोक्तियों एवं कहावतों का अनोखा संयोजन प्राप्त होता है साथ ही अनेक नये मुहावरें अभिराज जी ने स्वयं गढ़े हैं। संस्कृत के नये मुहावरों और कथनसन्धान करने में वे बेजोड़ हैं। वे लोकभाषा को कब परिनिष्ठित रूप में बदल देते हैं, पता भी नहीं चलता। । कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है- नयनासेचनकं कलयन्तः" 'तिमिङ्गिलो निगिरति लघुमीनम्', 'आकाशगतं कुसुमम्', 'क्व घटो ननु रज्जुगुणे त्रुटिते. प्रतिमुण्डकं विभिन्नमतिर्गर्भिताऽऽग्रहैः, 'क्वचिदपिकपालिखलीकृतम् उपभुज्यतेऽथ विगर्ह्यते, 'तरणीयुगले संस्थाप्य पदौ, कामं न सलिलयात्रा, उष्ट्राणां परिणये गर्दभा गायन्त्युत्सवगानम्', 'स्कन्धोपरि भुशुण्डी निधाय ये गुलिकाप्रहारमैच्छन्, "वृक्षे निशाविहारः सलिले च मत्स्यलाभः, वालुकातस्तैलमुद्धर्तुं' इत्यादि। इसके साथ ही अन्य 'नाट्येऽवसिते शैलूषोऽपि त्यजति हैतुकं वेषम्' काव्यरचनाओं में भी लोक-प्रचलित मुहावरे व कहावतें भी द्रष्टव्य है- 'खुदातोऽपि महत्तरो नग्न', 'चणकमेकं न भ्राष्ट्रं विदारयति', 'भित्तिरपि कर्णिनी भवति (नाट्यसप्तपदम्), शाकलवणमपि सङ्घटितं न भवेत् (चतुष्पथीयम्, पृ. 41), 'गुरुरहं गुड एव संवृत्तः शिष्यश्च पौण्ड्रशर्करायितः' (नाट्यसप्तपदम्, पृ. 58), 'सर्वमपि गुडगोमयं विधाय' (चतुष्पथीयम्, पृ. 08), 'इतः कूपः, ततः परिखा, मार्जार्याः कण्ठे घण्टिकामाबन्धुम् (इक्षुगन्धा) इत्यादि। '

उर्दू के प्रसिद्ध शायर गालिब के द्वारा मुल्क की बदहाली पर लिखे गये शेर को **प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र** ने अपने अनोखे अन्दाज से संस्कृत में ज्यों का त्यों उतार दिया है-

"बर्बाद गुलिस्तां करने को बस एक ही उल्लू काफी है

हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजामे गुलिस्तां क्या होगा।"

उद्याने यस्मिन् सान्द्रतरौ

प्रतिशाखमुलूका वल्गन्ते।

---

[11]वही, पृष्ठ संख्या 204

कल्याणं तस्य कथं भविता

सुषमा क्व वसन्तस्यागमने।।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी अपनी 'सन्धानम्' कविता में लिखते हैं-

(क)न पश्यति ह्येष सुदृश्यरूपं

श्रुणोति नैव श्रवणीयशब्दम्

जोगुञ्जयन् फूत्कभरैस्तु विश्वं

ढपोलशङ्खो महिमानमेति ||[12]

(ख)अश्वंस्तृणानि विचरन् बहुघासरम्ये |

क्षेत्रे खरं बहुलं ढेञ्चु रवं वितन्वन ||[13]

(ग)घण्टापथे रथे याति शब्दो धडधडेति सन्।

कम्पयन् सर्वमध्वानं धरित्रीं दारयन्नभूत्।।

निष्कम्पचामरशिखा केसरैर्वातचुम्बितै:।

अलङ्घ्या: स्वै रजोभिस्ते रश्या अक्षमया द्रुता:।।

पवनं जवना लङ्घमाना त्यजन्ति च क्षमाम्।

आलोडयन्त: पृथिवीं खुरनिर्घातकम्पिताम्।।

रणत्कारै: किङ्किणीनां ठणत्कारैश्च चक्रगै:।

खुराणां टप्टपैश्चैव शब्दस्तत्र व्यजृम्भृत।।

चले च रथे राज्ञो दरत्रस्तजनोज्झिता।

क्षुण्णा बहुखुराघातै: पदवी सा स्म लक्ष्यते।।

सखिभि: सह खेलद्भिर्धावित्वा सहसोज्झित:।

जोषं तस्थौ शिशु: स्तब्धो राजमार्गे चमत्कृत:।।

रथोऽन्तिकमगात् तस्य लक्ष्यबद्ध: शरो यथा।

अन्तरा च शिशुं रथ्यान् क्षणार्धेन समागता।।

तरसाऽश्वपदैर्लुप्यमानं क्रूरतया पथि।

आच्छिद्य रथरेखातो माता तस्य ररक्ष तम्।।

गतो रथो गता रथ्या आस्कन्द्य स्वीयपद्धतिम्।

[12]सन्धानम्, प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी, www.sanskrit.nic.in

[13]वही

अवशिष्टा तथा वार्ता रथयानस्य तद्दिने।।

अवशिष्टाश्च रेखास्ता रथचक्रविनिर्मिता:।

अवशिष्टा तथा माता शिशुं सङ्गोप्य वक्षसि।। ||[14]

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'फफककर रोना' के लिए 'फूत्कृत्य फूत्कृत्य रुदित्वा' 'हाथ का पंजा' के लिए 'पञ्चकम्', झोला के लिए 'झोलक:', 'सोने नहीं देता' के लिए 'शयितुं न ददाति' शब्द का प्रयोग किया है|

'आत्मनात्मानम्' में **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** द्वारा नूतन शब्द निर्माण और मुहावरेदार प्रयोग करके गद्य को सुन्दर बना दिया है। इस डायरी में अनेक स्थलों पर इसका प्रमाण हमें देखने को मिल सकता है।

"होटलेऽस्मिन् निवासः यथा कारागारे निवास । यावता विमानानि च चलन्ति तावता अत्र वासाय एयर-इण्डियाजनैरहमत्र प्रेषितः । अहं सर्वथा रजकगर्दभायितः, न गृहे स्थितोऽस्मि न वा घट्टे ।[15]

"होटले उड्डयिन्यां लिफ्ट इत्यस्या भित्तयः काचरचिताः । अनया उपरि आरोहन् आकाशे निलम्बितमिव आत्मानं मन्थे। सर्वं भव्यम् । अहं तावन् मधुविन्दून् आस्वादयन् पुरुष इव जातः ।[16] "

इसी प्रकार- "इतो विमानपत्तनं मतश्च ततो निवृत्तश्च । इदं पुनर्मूषको भवेति संवृत्तम्। पुनरपि अस्मिन्नेव सेण्टारहोटलं समागतः। पुनरपि विमानपत्तने गमनम् कृश कृष सर्वा खलुं वृथा अटाट्या, व्यर्थं च नाट्यम्[17] ।"

इस प्रकार इस डायरी में **प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी** ने अत्यन्त मनोरम शैली का प्रयोग कर इसे रोचक बना दिया है।

आचार्य त्रिपाठी जी ने रूमी पञ्चदशी के अन्त में फारसी शब्दों का संस्कृत में शब्दार्थ किया है- ब्रह्मज्ञानी, "दरवेश-भैक्ष्येण जीवनं यापयन् सिद्धः, साधुः । फकीर - भिक्षुकः संन्यासी । सूफी अध्यात्मवादी ।[18]

कवि ने मुहावरों का भी सुन्दर प्रयोग किया है- "यस्मिन् पत्रपुटे खाद्यते तस्मिन् एव छिद्रं क्रियते।[19] "

अर्थात् जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो।

इसी प्रकार अंग्रेजी के शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग भी यथास्थान किया है- "हेम लेट' नामकेनाङ्ग्लकविना 'षेक्स्पियर्' नाम्नि महाकाव्ये लिखितम्–'लाइफ् इस बट् ए वाकिंग षेडो ए टेल् टोल्ड वे एन ईडियट्..इति ।[20]

एक अन्य स्थल पर भी अंग्रेजी के वाक्यों का प्रयोग किया गया है

"ए मिस्टर ! प्लीस् स्टॉप् दिस् चेट्टरिंग । डोण्ट यू सी दट् अदर् पर्सन्स् आर् आल्सो सिटिंग् इन द कम्पार्टमेण्ट् ।[21]

इस पर महाकवि कण्टक क्षमा मांगते हुए कहता है- "ओह, ए आम वेरी सोरी।[22]

---

[14]वही

[15]आत्मनात्मानम्, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी,संस्कृत भारती नई दिल्ली, संस्करण 2011 ई., पृष्ठ 1

[16] वही, पृष्ठ 1

[17] वही,पृष्ठ 2

[18]वही पृष्ठ 22

[19]वही,पृष्ठ 24

[20]महाकवि कण्टक:, प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत परिषद् सागर म.प्र.,संस्करण 1971 ई., पृष्ठ 26

[21]वही,पृष्ठ 34

[22]वही,पृष्ठ 34

महाकविः कण्टकः पुस्तिका में **आचार्य त्रिपाठी** ने प्रयुक्त किए गए शब्दों का शब्दार्थ भी किया है- 'काष्ठोपवेशिन्या' (22) (कुर्सी). यात्रापत्र (25) (टिकट्). 'यात्रापत्र' (25) (टिकट), 'ताम्रभण्टाकीफलं (28) (टमाटर), 'स्कन्धन्यस्ताङ्गप्रौञ्छनवस्त्र (28) (तौलिया). 'वाष्पगन्त्र्या' (33) (रेल), 182 सम्पुटके (33) (रेल का डिब्बा), सञ्चारकुट्टिमं (33) (33) (रेल्वे कम्पार्टमेण्ट), 'वाष्पगन्त्रीपालकः' (33) (गार्ड), 'स्वपरिधानसेवकात्' (35) (जेब), 'कार्गलमुद्रा' (36) (करेन्सी नोट), 'स्वद्रव्योपहस्तिकात (36) (बटुवा), 'ध्वनिविस्तारकयन्त्र (37) (लाउडस्पीकर), नखम्पचा: (39) (गरमागरम), बेसनभिर्जिकाः (39) (बेसन की पकोड़ी), 'आसितं' (40) (अड्डा), 192 'नैमित्तिकावकाश (40) (केजुअल् लीव्), "शाट्या स्थाने पादयामः (42) (पायजामा), नरवाहने (45) (रिक्शा)।

डॉ.इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' अपने काव्य **'दूतप्रतिवचनम्'** टी.वी., शैम्पू जैसे नये शब्दों का प्रयोग करते हैं|

तन्वी श्यामा शिखरिदशना यक्षिणी या त्वदीया

टी.वी. मध्ये चपलनयना तारिका सा दृश्यते।

कान्ते स्वा विमलवटिकं फेनिलं लिम्पमाना।

स्नान्त्युन्मुक्ता भवति विविधक्रय्यवस्तु-प्रचारे।"

x x x

"सुन्दर्यस्ता पथि न मिलिता उद्गृहीतालकान्ताः,

केशास्तासामगुरुहिता नापितैः कृत्तपूर्वाः।

शैम्पूद्रव्यैः सुरभिमसृणा ब्यूटिकावीथिकासु,

दृष्टा बन्धो चकितचकिंत ते मया भिन्नबन्धाः।। श्लोक 38

इसी प्रकार के कुछ अन्य नवीन शब्दों यथा-डबलरोटिका, विमलवटिकं (साबुन), स्टोनो आदि का भी प्रयोग डॉ.प्रणव ने अपने काव्यों में किया है|

डॉ.कमला पाण्डेय ने अपने काव्य में अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है| यथा –

(क) अपि च सिन्थिटिके त्यभिसंज्ञितम् |[23]

(ख) प्लास्टिकेति प्रसिद्धा नवा निर्मित: |[24]

(ग) हन्त ! मीथेन नामा कुवायु: सदा |[25]

डॉ.महाश्वेता चतुर्वेदी ने अपने काव्य में अन्य भाषाओं के शब्दों को भी स्थान दिया है –

मोटरैर्यानै: ग्राममार्गे समागत: |

गुणा: न पूजिता यत्र चाटुकार –विवर्धनम् ||[26]

[23]रक्षत गड्गाम्, डॉ. कमला पाण्डेय, श्लोक संख्या 11 'रक्षत गड्गाम्' का प्रकाशन केन्द्र है- श्रीमाता पब्लिकेशन्स, बी/4/60, हनुमानघाट, वाराणसी , प्रथन संस्करण सन् 1999 ई.

[24]रक्षत गड्गाम्, श्लोक संख्या 11

[25]रक्षत गड्गाम्, श्लोक संख्या 26

[26]काव्याऽमृतम्, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, श्लोक संख्या 46

समकालीन संस्कृत साहित्य के युवाकवि **डॉ.ऋषिराज जानी** ने भी अपनी रचनाओं में नवीन शब्दों का प्रयोग किया है |

(नगरं प्रविष्टः संन्यासी मार्गं पश्यन् स्थितः)

संन्यासी - कुत्र नु गच्छत्ययं

मार्गः ?

कुत्र मां नेष्यति ननु ?

कुक्कुरः-मार्गे मार्गे बुभुक्षा वर्तते ।

प्रतिमार्ग केवलम् क्षुधैव दृश्यते ।

प्रत्येको मार्गः क्षुधाया मार्गः ।

प्रातः कालाद् आरभ्य

सांयकालपर्यन्तम्.....

न कोऽपि मार्गो: रोटिकां प्रति नयति ।

भ्रातः ! मार्गाग्रे वर्तते क्षुधा

मार्गपृष्ठे भवति स्वोदरपीडा ।

(तदा कारयानेन गच्छन्ति केचिद् युवानः युवतिभिः सार्धम् । ते मद्यमदोन्मता अर्धानावृतदेहास्सन्ति ।)

संन्यासी - भ्रातर : ! भगिन्यः !

अनेन मार्गेण कुत्राहं गन्तुं शक्नोमि ?

युवकाः- वयं न जानीमः

कुत्र नु गमनं शक्यम् ?

प्रत्येको मार्गः पिपासाया मार्गः ।

मार्गे मार्गे वर्तन्ते मदिरालयाः ।

किन्तु ते पिपासा न शमयन्ति,

प्रत्युत वर्धयन्ति ।

सन्ति केचित नवीना द्यूतालयाः ।

तत्रापि धनपिपासा द्विगुणी भवति ।

कानिचित् विलाससगृहाणि (Hotels) गति।

यदि

मद्यपानेन, धूमपानेन,

उन्मत्तकरैर्द्रव्यैः

त्वमपि पिपासां शमयितुमिच्छसितर्हि

गच्छाग्रतः ।

(ततः प्रविशति काऽपि सुन्दरी । तथा सुगन्धेन सुवासितः कृतो देहः । सा चलदूरभाषेण वार्तालापमग्ना |)

संन्यासी:- देवि । अहं नगराद वहिर्गन्तुमिच्छामि अपि मार्गोऽयं गच्छति वनम् । ?

सुंदरी:- अहं नास्मि देखि |

अहं तु दत्तसङ्केता युवती ।

(Call giri) । नगरस्य मार्ग न बहिन्ति ।

ते प्रतिनिवर्तन्ते वासना: प्रति ।

मार्गस्य लक्ष्यं वर्तते वासनातृप्तिः ।

किन्तु

वासना न भवन्ति तृप्ताः ।

अस्मिन्मेव मार्गे वासना गच्छन्ति, पुनरप्यागच्छन्ति ।

(तदा चत्वारो जना: 'राम नाम सत्यं वर्तते' इति ब्रुवन्तो गच्छन्ति ।)

संन्यासो :- किं कोऽपि कथयितुं शक्नोति यत् कुत्र नु माम् नेष्यति मार्गोऽयमिति ?

(चत्वारो जनाः पुनरपि तदेव वाक्यं ब्रूवन्ति)

शव:- प्रत्येको मार्गः श्मशानं प्रति नयति जीवम् ।

सत्यमार्गं मार्गयतां जनानाम्

आयुः समाप्यते ।

मरणोत्तरमपि नवो मार्गः प्रारभते ।

संन्यासी :- मया लब्धो मार्गः ।

मया मार्गे ज्ञातः ।

आम् ! ज्ञातम् । न मार्गो नयति मनुष्यम्; मनुष्यः स्वयमेव मार्गं नयति लक्ष्यं प्रति ।

(संन्यासी गच्छति शनैः शनैः स्वेनैव मार्गेण....) |[27]

x x x

प्रातःकाले षड्वादने

बहुभूमि भवने

चतुर्विंशतितमायां भूमिकायां

[27]समुद्रे बुद्धस्य नेत्रे, डॉ.ऋषिराज जानी,श्रीवाणी अकादमी अहमदाबाद गुजरात, प्रथम संस्करण 2014 ई., पृष्ठ संख्या 10

द्वारम् उद्घाट्य अहं द्वारघण्टां श्रुत्वा पश्यामि,

दुग्धविक्रेता दुग्धं पात्रे निक्षिपति, स्मितेन सह स प्रतिनिवर्तते।

नववादने

अहं कार्यालय प्रति गन्तुमुत्सुकः यन्त्रचालितामुन्नयनीं (Lite) गच्छामि।

लिफ्टचालकः 'सुप्रभातम्' कथयित्वा। मां भवनतलं प्रति नयति। अहं चलदूरभाषे

विद्युत्पत्राणां वाचने व्यस्तः। कस्य समीपे ननु काल- स्तस्मै प्रत्युत्तरे वक्तुम् ? |[28]

x x x

विक्रयमहालयस्य दर्शनम्

(Shoping Mall)

भव्यातिभव्यं विक्रयमहालयं

प्रेक्षितुं गच्छामि।

तत्र महार्हवस्तूनाम्

आपणा विद्युत्तेजोद्योतमाना

दृष्टिं हृदयं चाकर्षयन्ति।

निरीक्षेऽहं

घटिका - चलदूरभाष - क्रोडसंगणक - पादत्राण -

वस्त्र- गन्धद्रव्याणां

वस्तुजातस्य सञ्चयं

यं दृष्टवा परीक्षे, समीक्षे।

मूल्यचिटिकाः ...

पठित्वा पुनरपि तत्-तत् वस्तु

यथास्थानं स्थापयामि।

मम दीर्घनिश्वासेन

आपणकाचभित्तौ बाष्पं दृश्यते।

-

-कदाचिद् अहं धनिकः अभविष्यम्

-यदि ममं वेतनम् अधिकमभविष्यत्

[28]वही पृष्ठ 15

इति विचारयन् –

निर्गच्छामि।

निदाघतप्ते मार्गे मम कारयानात् पश्यामहं

-नग्नपादं,

-प्रस्वेदविलन्नं

-भारवाहकं

-स्थविरं श्रमिकम्।

स नभो वीक्ष्य

दीर्घं निश्वसिति।

तदेव सहसा

कतिपया जलबिन्दवः

पतन्ति।

कारयानाद् बहिर्निगत्य

अहं स्थविरेण सह

वृष्टिमनुभवामि।

आवयोः निश्वासरूपेण

प्रेषित उपालम्भः

केनापि श्रुतः स्यात्।[29]

x x x

दूरवस्थां गतं सङ्गणकयन्त्रम्

सङ्गणकवन् मनुष्येनापि विस्मृतः

स्वपारशब्दः (Password)

तस्य मनसः मृद्वङ्गम् (Software)

विकृतं जातं

-मित्राणां द्रोहेन

-सहकर्मकाराणाम् ईर्ष्यया

-बन्धूनां स्नेहप्रपञ्चेन।

[29]वही, पृष्ठ संख्या 20

तस्य चालकभागाः

निरर्थकाः जाताः

-भविष्यद् अनिश्चियात्मकतया

-असाफल्यस्य भयात्

तस्य लक्ष्यं, संकल्पाः, नैतिकता

-एतत् सर्वं अवकारिकायां

.....गतः ।

तस्य संगीतवादके ...

केवलं वाद्यते

-क्षरदश्रुबिन्दुस्वरः

शुष्कपर्णध्वनिः ।

रोगार्तिव्याकुलं शरीराङ्गानां

चीत्कारः ।

अधुना दूरवस्थागतं मनुष्यस्य मनोमयं

सङ्गणकयन्त्रं नीतं सङ्गणकज्ञातुः समीपे ।

सङ्गणक -अभियन्ता ज्ञातवान् कारणानि ।

तेन प्रतिष्ठापिताः

-उदितसूर्यकिरणाः

-पुष्पाणां सौरभाः

-वृक्षाणां हरितवर्णाः

-समुद्रोर्मिमालाः

-ग्रीष्मपलाशपुष्परागाः ।

अधुना मनोमयं सङ्गणकयन्त्रं

पूर्ववत् कार्यरतं जातं

किं भवद्भिः अपि

गृहीतभारं (download) कृतं

एतद् सर्वं मृद्वङ्गे वः ?[30]

[30]वही,पृष्ठ 72 -73

x x x

रुग्णवृक्षः

सुप्तोऽस्ति तरुः

चलरुग्णशय्यायां (Stretcher)

तस्य हृदयस्पदनेषु

नास्ति हरितिमा।

अतीते तस्य दृढस्थाणुः

अधुना

स्थातुं न शक्तः

चालनयष्टिरहितः।

नीडविहीना शाखा-

श्चैतन्यरहिताः जाताः।

तस्य कण्ठात् न जलबिन्दुरपि

उदरं गच्छति वा न

इति ज्ञातुं चिकित्सका असमर्थाः

तस्मै ग्लुकोझद्रव्यं दातुम्।

चलरुग्णय्यायां (Stretcher) सुप्तः

विस्फारितनेत्रो वृक्षः।

परितः स्थितान्

सूर्य-चन्द्र-ताराविहगर्तुपर्णमयान्

परिचितान् अभिज्ञातुं

प्रयत्नं करोति।

किन्तु

तस्य नेत्रयोः

ऋतोः प्रतिबिम्बं

नास्ति।

प्रदूषणवशात् तस्य

हृत्स्पंदनालेखः(Cardiogram)

अस्थिरो जातः ।

वृक्षः अन्तीमश्वासन्

गृह्णाति ।

नगरे इयं कथा नास्ति

केवलम् एकवृक्षस्य एव ।[31]

संस्कृत के युवाकवि **डॉ.युवराज भट्टराई** ने भी अपने काव्यसंग्रह **'मनोऽनुरञ्जिनी'** में बहुत सारे विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है|

तत् त्वया प्रेषितं दूरसन्देशनं

सुप्रभाते पठित्वा पुरा प्रत्यहम् |

संविधातुं भवाम्युद्यतः स्माऽऽह्लिकं

दुःख्यते मे मनः खण्डयित्वा कथम् ? ||41|| पृष्ठ 48

x x x

नूतने वत्सरे पुष्पगुच्छं नवं

जन्मनो वासरे चाकलेटं शुभम्।

त्वर्पितं तत्त्वया स्वेच्छया सस्पृहं

विस्मृतं किं त्वया ह्लादकं तत्क्षणम् ? ॥46 ॥

(नूतन संवत्सर के आगमन पर तुमने नवपुष्प गुच्छ भेंट किया था औ जन्मदिन में तुम मुझे प्रेमपूर्वक अपनी ही इच्छा से चाकलेट आदि शुभ उपहार अर्पित करती थी। हे प्रिये! क्या वह आह्लादक स्नेहान्वित क्षणों क तुमने भुला दिया? अर्थात् मुझे विश्वास है कि वे क्षण तुम्हारे लिए भी विस्मारणीय नहीं हैं ॥46)

x x x

लोचने रोचकं चाञ्जनं लेपयेः

प्रार्थितं त्वष्ठयोत्स्त्वष्ठरागं न्यसेः।

केशचूडेऽपि पुष्पं प्रिये! योजयेः

सेन्टगन्धिं शरीरे समुद्वासयेः ॥53॥

(प्रिये! मैं तुम्हे अपने विशाल लोचनों में रोचक अञ्जन लेपन करने के लिए, सुन्दर अधरोष्ठ में ओष्ठराग (lipstick) लगाने के लिए, घने केशचूड में खिलते पुष्प सजाने के लिए तथा लावण्यपूर्ण शरीर में सुगन्धित सेन्ट द्रव्य उद्वासित करने के लिए प्रार्थना किया करता था अर्थात् अब तुम मेरी इन समस्त प्रार्थनाओं का पालन कर रही हो या नहीं? यह वियोगी जानना चाहता है।)

[31]वही,पृष्ठ 70-71

x x x

सत्कृता सा मया मित्रकल्पा तदा

कोक-पेप्सी-सुपेयैः सुखाद्यैस्तथा।

दर्शिताः हार्दभावाश्च तस्यै शुभाः

किन्तु हा! नाऽवदत् मौनमाश्रित्य सा ॥ 2॥

(तब मैंने मित्रकल्पा उस शोभनाङ्गी का स्वागत सत्कार कोक-पेप्सी आदि पेय पदार्थों से एवं बिस्कुट नमकीन आदि खाद्य-पदार्थों से किया। तदनन्तर अपने हार्दिक प्रेम भावों से उसको अवगत कराया। किन्तु खेद का विषय था कि वह मौन का आश्रय लेकर कुछ भी न बोली)

उपसंहार-

सारांशतः कहा जा सकता है कि- संस्कृत में दिन प्रतिदिन नये-नये प्रयोग हो रहे है | नवीन-विधाओं का निरन्तर सृजन हो रहा है। आज का कवि प्रत्येक व्यक्ति के लिए साहित्य सर्जन कर रहा है | वह आम जनता तक अपनी रचना के माध्यम से अपनी बात पहुँचना चाहता है | आधुनिक संस्कृत-लेखन में गद्य की अपेक्षा पद्य को अधिक प्रश्रय मिला है | जबकि अन्य भारतीय भाषाओं में गद्य को। संस्कृत भाषा में प्राचीन शैली और भावबोध की रचनाओं के साथ-साथ नवीन शैली और भावबोध की रचनाओं का सर्जन इस भाषा की अद्भुत सर्जन क्षमता और जीवन्तता का द्योतक है।